विचित्र का चित्र, चरित्र में उतारें

शक्ति का रूपांतरण कर साकार में दर्शाना। जैसे बिजली एक शक्ति है, उसका कोई चित्र नहीं होता और ना ही वो दिखती है, परंतु एक योग्य साधन के माध्यम से पता चलता है कि लाइट है। जैसे पंखे का घूमना, ट्यूबलाइट का जलना ये दर्शाता है कि शक्ति है, लाइट है, तब तो वो चलित हो रहा है। ठीक वैसे ही परमात्मा एक शक्ति है, उसको अपने चरित्र रूपी चित्र में उतारेंगे, तभी तो समझ पायेंगे कि परमात्मा शक्ति है और उसका कार्य चल रहा है।

साइंस के साधनों का मूल आधार है लाइट। और लाइट के आधार से साइंस का जलवा है। लाइट की ही शक्ति है। ऐसे ही साइलेंस की शक्ति का आधार है डिवाइन इनसाइट। इसके द्वारा साइलेंस की शक्ति का बहुत ही अद्भुत अनुभव कर सकते हैं। जैसे स्थूल साधनों के द्वारा सैर कर सकते हैं, वैसे ही साइलेंस की पावर द्वारा जब चाहो, जहां चाहो वहां का अनुभव कर सकते हैं। हम बात ये कर रहे हैं कि विचित्र का चित्र हम इस धरा पर कैसे उतारें? शक्ति का कोई चित्र तो नहीं होता, पर शक्ति है ज़रूर। वो कैसे देखता है, कैसे सुनता है और कैसे करता है। है अजीब, पर है वास्तविक। परमात्मा को निराकार कहते हैं। निराकार फिर कार्य कैसे करेगा, देखेगा कैसे!

विचित्र की अनुभूति चित्र में

हम आपको बताना चाहते हैं, सीधी सी बात है कि जैसे मनुष्य के शरीर में चेतन सत्ता आत्मा नहीं है, तो शरीर न कार्य कर पाता, न देख पाता और न सुन पाता। लेकिन न दिखने वाली चेतनता ही स्थूल शरीर के साधन से देखती है और उससे ही कर्म करती है। स्थूल शरीर के माध्यम से हम जान पाते हैं कि इस आत्मा की क्वालिटी कैसी है। ऐसे ही परमात्मा भी है तो ज्योति स्वरूप, पर जब उसे कार्य करना होता है, देखना होता है तो शरीर का आधार लेकर, उस शरीर रूपी साधन के माध्यम से वो देखता भी है, सुनता भी है और करता भी है। जैसे कोई नाटक होता है, नाटक में जिसका पार्ट जिस समय होता है, उस समय उसी वेश को धारण कर वो स्टेज पर अपना पार्ट बजाता है। ठीक वैसे ही कालचक्र के अंदर वर्तमान में परमात्मा का रूप इस धरा पर साकार माध्यम के द्वारा कार्य करता है। तब तो कहते हैं ना कि त्वमेव माताश्च पिता...। तो ज़रूर इस धरा पर साकार के माध्यम से सम्बंध हमारे साथ उनका भी बनता है।

विचित्र की सुंदर रचना

अब बात है कि विचित्र श्रेष्ठ व सुंदर रचना कैसे रचे? विचित्र को हम चरितार्थ कैसे करें? ये हमारे सामने चुनौति भी है और हमारा उत्तरदायित्व भी। कहते हैं, भगवान ने जब दुनिया रची तो बहुत सुंदर रची थी। तो जिसकी रचना इतनी सुंदर, वो कितना सुंदर होगा! तो बात ये है कि उनकी जो रचना हैं, तो रचना में ऐसी कौन सी क्वालिटी हो, गुणवत्ता हो, जिससे सभी समझ पायें कि ये भगवान की रचना हैं। हम बोलचाल में कहते हैं कि ये तो जैसे कि भगवान का रूप है। तो ज़रूर भगवान ने ऐसी सुंदर शक्तियों की खुशबू से हमें सजाया भी होगा और गुणों से संवारा भी होगा। विचित्र को प्रत्यक्ष कैसे करें और कैसे बतायें कि भगवान ये है, क्योंकि उनका कोई चित्र तो है नहीं, जो हम दूसरों को दिखा सकें।

विचित्र की शक्तियों का उपयोग

हम भगवान की डायरेक्ट रचना बने, हमने भगवान को पहचाना और भगवान ने हमको पहचाना और उसने हमें इस योग्य बनाया कि हम भगवान को प्रत्यक्ष कर सकें। तो जब उनके द्वारा दी गई शक्तियों को हम अपने कार्य व्यवहार में उतारें, असाधारण कर्म करके दिखायें, तभी तो वे मानेंगे कि ये जैसे अल्लाह के लोग हैं। वरना तो हम भी साधारण कर्म करते रहेंगे तो दूसरे कैसे समझेंगे कि ये भगवान की रचना हैं!

प्राप्ति की झलक और फलक जीवन से

नवरात्रि के दिनों में भक्त ये अपेक्षा रखते हैं कि जड़ मूर्ति से भी हमें साक्षात्कार हो जाये या दर्शन हो जाये। हमारी मनोकामनायें पूरी हो जायें। एक पल के लिए ही सही, पर हमें दर्शन हो जाये। तो ये सब साकार में कैसे संभव

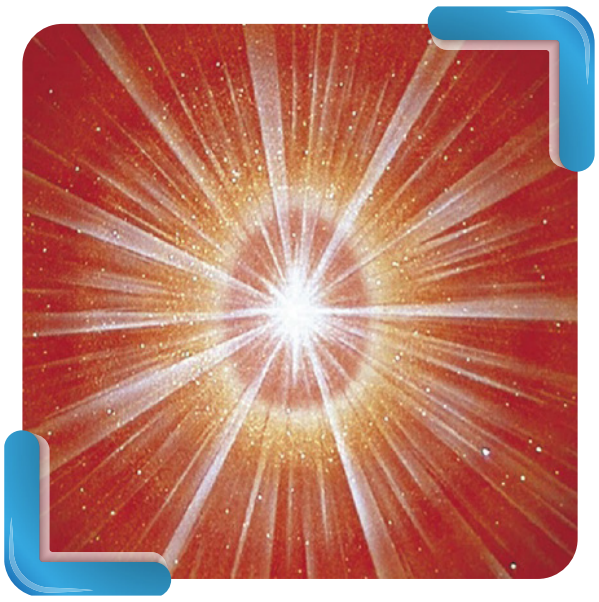

होगा? हमने निराकार परमात्मा से जो पाया है, वो हमारे जीवन से झलक और फलक नज़र आये, ये हमारा कर्त्तव्य है। जबकि चारो ओर एक पल के दर्शन के प्यासे भक्त आपको पुकार रहे हैं, ये आवाज़ आपको सुनाई देती है? सुनाई भी तभी दे सकती है, जब हम उस कर्त्तव्य के लिए अपने आपको निमित्त समझेंगे। हमें परमात्मा के द्वारा सभी को प्राप्ति कराने का माध्यम बनना होगा। उस लायक पात्र बनना होगा। तभी तो वे जानेंगे कि ये भगवान की रचना हैं। तो हमारे ऊपर बहुत बड़ी ज़िम्मेवारी है। हमारी चाल चलन, बोलना, उठना, करना, सब असाधारण, दिव्य और अलौकिक हो। तब वे कहेंगे कि भगवान इस धरा पर कार्य कर रहा है। तो विचित्र को चित्र में उतारना, अर्थात् अपने श्रेष्ठ चरित्र को दर्शाना।

निश्चित समय पर श्रेष्ठ स्थिति द्वारा सेवा

तो हम इसके लिए छोटा सा एक प्लान बनायें। चारो ओर जब भक्तों द्वारा पूजा आराधना की गूंज होगी और ऐसा वातावरण होगा, तब हमें खास समय पर श्रेष्ठ स्थिति की अवस्था में स्थित रहकर उन तक परमात्म शक्ति को पहुंचाकर उनकी मनोकामनायें पूर्ण करनी होगी। इस अवस्था में बहुत ही शांति के साथ और कर्त्तव्य बोध के साथ एक जगह बैठ जायें और सबको मन इच्छित फल प्राप्त करायें।

एक सुनहरा अवसर

ये अनुभव हमारी दिवाली की यादगार है कि देवताओं का राज्याभिषेक होता है और आसुरी शक्तियों का विनाश होकर दैवी शक्तियों का साम्राज्य होता है। उनमें मुझे अपना नाम रजिस्टर कराने का एक सुनहरा अवसर है। तब भला सोच क्या रहे हैं! ऐसा अनुभव अपने जीवन में संजोना चाहेंगे ना! इस विधिपूर्वक करने पर आप भी ऐसा अनुभव करेंगे कि जैसे सबकुछ प्रत्यक्ष में सामने हो रहा है और हमारे द्वारा दूसरों को भी ऐसी अनुभूति होगी। हमारे अनुभवों से दूसरों को भी ऐसा प्रत्यक्ष अनुभव होगा कि यही वो हैं जिन्हें स्वयं परमात्मा ने तराशा है। हमें जो चाह थी वो मिल गया, पा लिया... बस यही गीत उनके दिलों में गूंजेगा।

सीकर-राज.। विधायक रत्न जलधारी को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. मधु। साथ हैं ब्र.कु. वनिता।

पानीपत-हरि.। 12 दिवसीय 'अलविदा तनाव' कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. पूनम, ब्र.कु. सुनीता, ब्र.कु. बिंदु, विधायक महिपाल जी, भाजपा महासचिव संजय भाटिया तथा अन्य।

सिरोही-राज.। डिस्ट्रिक्ट एडवोकेट एसोसिएशन में रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् एडवोकेट्स के साथ ब्र.कु. एडवोकेट लता, ब्र.कु. अरुणा व अन्य।

मुरसान-हाथरस(उ.प्र.)। 'द्वादश ज्योतिर्लिंगम शिव दर्शन मेला' में दीप प्रज्वलन के पश्चात् उपस्थित हैं श्रीधाम वृंदावन से भगवताचार्य कीर्ति किशोरी जी, जिलाधिकारी डॉ. रमा शंकर मौर्य, ब्र.कु. भावना, नगर पंचायत अध्यक्ष रजनीश कुशवाहा, पूर्व चेयरमैन गिरिराज किशोर तथा अन्य।

हथरस-उ.प्र.। किसान मेले में आयोजित 'ग्राम सेवा प्रदर्शनी' का रिबन काटकर उद्घाटन करते हुए कमिश्नर अजय दीप सिंह। साथ हैं ब्र.कु. शांता, अपर जिला अधिकारी रेखा एस.चौहान तथा उप जिला अधिकारी व अन्य।

रामपुर-बरेली(उ.प्र.)। सी.आर.पी.एफ. सेंटर में कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में डी.आई.जी. सुनील जून, मेडिकल डी.आई.जी., कर्नल बी.सी. सती तथा अन्य सीनियर ऑफिसर्स के साथ ब्र.कु. संगीता, ब्र.कु. पूनम, ब्र.कु. रीतू तथा ब्र.कु. करण सिंह राणा।

सिवनी-हरियाणा। 'ग्रामीण विकास के लिए तरुण (ग्रवित)' कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. राजिन्दर बहन। साथ हैं ब्र.कु. निर्मल, ट्रेनर मनोज जांगरा, ट्रेनर सुनीता बहन तथा अन्य।

निम्बाहेड़ा-चित्तौड़गढ़(राज.)। सेवाकेन्द्र पर पल्लवन संस्था द्वारा पौधारोपण करने के पश्चात् चित्र में पल्लवन संस्था के अध्यक्ष कुलदीप, हिमांशु, ब्र.कु. शिवली, ब्र.कु. अनीता तथा अन्य।